जिनभाषित २००६ १२ (फोल्डर नं. ०२४३१२)

सम्पादक – प्रो. रतनचन्द्र जैन

मुख्य टाइटल
अनुक्रमणिका
संपादकीय – दिगम्बर जैन परम्परा को मिटाने की सलाह ----------२
गाँधी जी और चम्पतराय जी के पारस्परिक पत्र ---------- ९
दिगम्बरत्व का महत्त्व – स्व. डॉ. ज्योतिप्रसाद जी जैन ---------- १५
शुभभाव कर्मक्षय का कारण – मुनि श्री प्रणम्यसागरजी ---------- १७
समाधिमरण-तुलना एवं समीक्षा – प्रो. डॉ. सागरमल जैन ---------- १९
मिथ्याप्रचारकों से सावधान – पं. पुलक गोयल शास्त्री ---------- २४
सन्तों की आड़ में त्मघाती खेल न खेलें – डॉ. राजेन्द्रकुमार बंसल ---------- २७
आओ एक अभियान चलाएँ – शैलेष जैन शास्त्री ---------- २९
जिज्ञासा समाधान – पं. रतनलाल बैनाड़ा ----------३१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org